अल्फ़ाज़...

निखिल उप्रेती

कविता सूची

समीक्षा

प्रस्तावना

दो अल्फ़ाज़ .....

1. अगर ऐसा ही..... 12

2. हमने भी देखी..... 13

3. आम फितरत में..... 14

4. बस यही सोच कर.... 15

5. वक़्त गुम हो गया.... 16

6. जहां जाता हूँ..... 17

7. ख़्वाब जलते हैं..... 18

8. निगाहें मुझ पे नहीं... 19

9. बस ये आखरी..... 20

10. मैंने कल रात..... 21

कविता सूची

11.	साँसों का लबादा…….	22
12.	बेमतलब से……	23
13.	आज भी नींद है…….	24
14.	मैं चुप हो गया हूँ…….	25
15.	है तमाशबीन…….	26
16.	भा गया इस दिल को…..	27
17.	हसीं लगते हैं…….	28
18.	बिना कश्ती के समंदर में…	29
19.	बस यही सोच…….	30
20.	बस कहीं अक्सर……	31

समीक्षा

निखिल उप्रेती द्वारा रचित ये कवितायें इस युवा कवि की मानव समवेदनाओं पर अच्छी पकड़ को दर्शाती हैं... अपने दिल के जज़्बातों को निखिल ने अल्फ़ाज़ों में जिस तरह से ढाला है उसी से मालूम पड़ता है की कविताओं के क्षितिज में इस युवा कवि का भविष्य एक उज्ज्वल सितारे के समान है....

विनोद तिवारी
पूर्व संपादक "माधुरी"

समीक्षा

निखिल की कविताओं में एक ताज़गी है... जज़्बातों को बयां करती हुई ये सीधे दिल पे असर करती हैं.... साधारण लहज़े में कहे ये अल्फ़ाज़ बहुत दूर तक कहीं दिल में उतर जाते हैं.... मैं निखिल को उनकी इस कोशिश के लिए बधाई देती हूँ साथ ही उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करती हूँ...

मीना चोपड़ा
चित्रकार, कवयित्री, एजुकेटर

डायरेक्टर - "हिंदी रायटर्स गिल्ड"
डायरेक्टर – "क्रॉस कर्रेंट्स" - इंडो कैनेडियन
इंटरनेशनल आर्ट्स फाउंडर मेम्बर - साउथ
एशियन प्रेस क्लब ऑफ़ कैनाडा

प्रस्तावना

अल्फ़ाज़ों की नाव को कागज़ के दरिया में उतारने की ये मेरी छोटी सी कोशिश है,

जज़्बातों का तूफान शायरी के इस समंदर में किन साहिलों से मुझे मिलाता है बस ये ही देखना चाहता हूँ....कभी लगता है सारी कायनात चंद अल्फ़ाज़ों में सिमट के रह गयी है.....पर फिर भी बहुत कुछ लिखना अभी बाकी है, ये ही चंद अल्फ़ाज़ हैं जो मेरी सोच को एक नया आयाम देते हैं.....

निखिल